जागरण

भीति, लोभ या उदासीनता वश अघ सहता मौन ।
उससे बड़ा और हतभागी इस जग में है कौन ।।
अन्य पुरुष पीड़ा प्रति निस्पृह नहीं जानता मूढ़ ।
बना चुका अरि उसके क्षय की कटु योजना निगूढ़ ।। 1 ।।

पूर्ण समर्पित लक्ष्यों के प्रति पटु योजना प्रवीण ।
नहीं कदापि उपेक्ष्य भले ही दिखता अब तक क्षीण ।।
तुम कामादि मानते षड् रिपु, उनके प्रेरक घोर ।
तुम्हें दीखता व्योम उन्हें दिखता धरणी का छोर ।। 2 ।।

तुम श्रम से बस करो धरा को शस्य श्यामलारम्य ।
वे बस बल पूर्वक भोगेंगे जिनकी क्षुधा अशम्य ।।
सकल धरा पर मान रहे जो नैसर्गिक अधिकार ।
स्वामी बनने को लालायित जो जगती के भार ।। 3 ।।

असुरों से भी अधिक आज जो माया रण में दक्ष ।
नीति न्याय शम क्षांति मोघ है ऐसे शत्रु समक्ष ।।
यह लोहा भी नम्य चाहिए बस शौर्यानल ताप ।
केवल बल उच्छेद्य प्रपीड़क ये जग के अभिशाप ।। 4 ।।

अवर अन्य संस्कृति न कर सकी पशुबल से विस्तार ।
नहीं मिटा सकती सागर को सरिताओं की धार ।।
इसके उदाहरण एकाकी केवल हम जगमध्य ।
क्योंकि जानते वपु ही भंगुर पर चेतना अवध्य ।। 5 ।।

मौन सहे हैं बहुत काल तक हमने अत्याचार ।

ढोया बहुत दिनों तक दुर्वह अपमानों का भार ।।

त्याग तितिक्षा दुखद बुध्दि धर रही नवल आकार ।

अब संकल्पित आर्य प्रबलतम करने को प्रतिकार ।। 6 ।।

- शिव कुमार मिश्र
आई.ओ.एफ.एस. (से.नि.)

17-03-2022 मैनपुरी (उ.प्र.)